International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(III), April - June, 2023, pp. 178-181

भारतीय त्रेवार्षिकी अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी

डॉ. शीनू चौहान*

सार

अंतर्राष्ट्रीय विश्वकला प्रदर्शनी 'त्रैवार्षिकी–भारत' जिसे ललित कला अकादेमी (राष्ट्रीय कला संस्थान) 1968 से निरन्तर तीन वर्षो के अन्तराल पर आयोजित करती रही है, यह वह मंच है जहाँ विश्वभर के कलाकारो को एक ही छत के नीचे अपने सृजनात्मक कार्य तथा अनुभूतियो को आपस में आदान–प्रदान कर सकें। त्रैवार्षिकी का अभी तक अपने उद्धेश्य की पूर्ति में सफल प्रयास रहा है। 1968 की प्रथम त्रैवार्षिकी से लेकर 2005 तक कुल ग्यारह त्रैवार्षिकीयाँ हो चुकी है, तथा भारत सरकार ने उसके स्थान पर इंडिया आर्ट फेयर शुरू कर दिया। समूचे विश्व में समकालीन कला में हो रहे नवीनतम प्रयोगो, विभिन्न परंपराओ को जानने समझने हेतु भारत ने कला के विकास एवं विभिन्न संस्कृतियो को जानने के क्षैत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू की। भारत देश का सौभाग्य है कि वह भौगोलिक दृष्टि से पूरब और पश्चिम के बीच में स्थित है। यह एक ऐसा देश भी है जो अपनी अद्भुत और गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत के लिए समकालीन कला के सामने आलोकित है। प्रथम त्रैवार्षिकी के लिए विश्व के सभी देशो को आमंत्रित किया गया था, शायद भारत का यह पहला प्रयास था। इसलिए केवल 31 देशो ने ही भाग लिया था। द्वितीय त्रैवार्षिकी में यह संख्या बढकर 47 हो गई। संख्या बढने से अकादेमी को कई समस्याओ से जुझना पड़ा था। तृतीय त्रैवार्षिकी के समय यह निर्णण लिया गया था कि उन सभी देशो आमंत्रित किया जायेगा। जिन्होने समकालीन कला में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है और जिसके साथ भारत ने सांस्कृतिक समझौते पर हस्ताक्षर भी किये थे। इस त्रैवार्षिकी में 22 देशो ने भाग लिया तथा चौथी, पांचवी, छठी व सातवी त्रैवार्षिकी में 36,44,42,39 देशो ने भाग लिया था। इसके पश्चात आठवी, नौवी, दसवी व ग्यारहवी में क्रमशः 37,48,30,34 देशो ने भागीदारी की।

शब्दकोषः *त्रेवार्षिकी भारत, समसामयिक कला, अन्तर्राष्ट्रीय कला संस्थापन कला, अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी।*

प्रस्तावना

देश के विभिन्न क्षेत्रो के कलाकारो और कला रसिको के बीच आपस मे संवाद स्थापित करने विचारो के परस्पर आदान–प्रदान हेतु ललित कला अकादेमी द्वारा विभिन्न प्रदर्शनियो का आयोजन किया गया। लगभग एक दशक से कुछ अधिक समय के पश्चात यह महसूस होने लगा कि सांस्कृतिक आदान–प्रदान को केवल हमारे राष्ट्र तक ही सीमित रखना काफी नही है। बल्कि उसे विश्वस्तरीय मंच प्रदान करना होगा। जहाँ भारतीय कलाकार अपनी कला को समकालीन विश्वकला के संदर्भ में देखे। क्योकि किसी भी राष्ट्र की संस्कृति एवं कला एकांत में फल–फूल नही सकती और न ही विश्वस्तरीय संस्कृति एवं कला के संदर्भ में प्रासंगिता सिद्ध कर सकती है। जब तक कि उसका विश्वकला मंच पर आंकलन नही किया जाता।

* स्कूल व्याख्याता, कोटा, राजस्थान।

अतः तत्कालीन ललित कला अकादेमी अध्यक्ष डॉ. मुल्कराज आनन्द द्वारा वेनिस की द्वि–वार्षिकी की रूपरेखा पर भारत में प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार ललित कला अकादेमी के विभिन्न कार्यक्रमों के राष्ट्रीय सें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रगति व विस्तार हेतु समकालीन विश्वकला प्रदर्शनी का विचार प्रस्तावित किया गया। इस प्रस्ताव के पीछे एक अन्य कारण यह भी था, कि उन्होने महसूस किया कि जब वेनिस, पेरिस और टोक्यो में द्वि–वार्षिकी का आयोजन किया जाता रहा है, फिर भी कई एशियन, अफ्रीकी और समाजवादी देश ऐसा कोई भी मंच स्थापित नही कर पाया है। इन खाईयो को अगर भरना है तो कलाकारो को एक वैश्विक (विश्वस्तरीय) मंच पर लाना होगा तथा कला सम्मिलित प्रदर्शन एक सशक्त कदम होगा।

आशा है कि त्रैवार्षिकी–भारत समस्त विश्व के कलाकारो के लिए एक ऐसा मंच सिद्ध हो रही है, जिसमें समस्त विश्व के कलाकार भाग लेकर आपसी संवाद के द्वारा अभिव्यक्ति के नये–नये आयाम खोज सकेंगे।

प्रक्रिया

1968 में प्रथम त्रैवार्षिकी का आयोजन राजधानी दिल्ली में हुआ था। यही वह स्थान है, जहां प्रत्येक तीन वर्षो में विश्व की समसामयिक कला को एक ही मंच पर तकनीक, वैचारिक व प्रयोगात्मक स्तर पर देख परख सकते है। प्रथम त्रैवार्षिकी में भारत सरकार द्वारा विश्व के सभी देशो को आमंत्रित किया गया । भारत देश के लिए यह नवीन अवसर था और उसमें विश्व के 31 देशों के कलाकारो ने भाग लिया।

इस प्रथम त्रैवार्षिकी पर अपनी शुभकामना देते हुए विख्यात कलाकार हेनरी मूर ने लिखा था– ''पूरब और पश्चिम की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के विनिमय का यह एक महान अवसर है जिसमें पूरी आधुनिक दुनिया के सक्रिय लोगो को एक होने में मदद मिलेगी।''

यह प्रथम आयोजन एक ऐतिहासिक घटनापूर्ण और रोमांचक यात्रा की तरह रहा है और अब तक 11 त्रैवार्षिकिया हो चुकी है। जैसे–जैसे समय बदलता गया कला में प्रयोग होने वाली तकनिको में भी खूब नवीन प्रयोग हुए है। चाहे वह रंगो के नवीन प्रयोग हो या कैनवास को विभिन्न प्रकार से प्रदर्शित करने के प्रयोग, जैस गोलाकार, त्रिभुजाकार आदि या फिर विषय वस्तु को प्रस्तुत करने का अंदाज हर क्षैत्र में नवीन तकनिको का प्रयोग देखने को मिलता है। चित्रो में कम्प्यूटर और मिले–जुले माध्यमो का प्रयोग, रंगो के विभिन्न रूपों का संयोजन, बहुत देखने को मिलता है। चित्रों के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग भारत ही नही वरन् अन्य देशो में भी इसमें कला के क्षेत्र में नईसंभवनाएं पैदा की है।

यह कहना अनावश्यक नही होगा कि त्रैवार्षिकी जैसे अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन ने भारतीय समकालीन कला को विकसित करने का अवसर प्रदान किया है और इससे प्रेरणा पाकर भारतीय कलाकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हुए है। प्रत्येक त्रैवार्षिकी का आयोजन कलारसिको में कलाविवेक, कला रूचि बढाने में एक चमत्कारी रूप से चिनगारी पैदा करने का दावा कर सकती है। जैस–जैसे त्रैवार्षिकी आयोजन होते गये उसके साथ–साथ विभिन्न देशो की भागीदारी बढती चली गई। उसके पश्चात सबसे अधिक कलाकार नवीं त्रैवार्षिकी भारत 1997 प्रदर्शनी के लिए 48 देशो से आए और इस तरह के चित्र और शिल्पों पर की गई टिप्पणियों से यह साफ प्रकट होता है कि वह सप्रेम आए है। वही प्रेम जिसे कला समझती है और जो एक–दूसरे को समझने का अधिष्ठान भी है। इसे त्रैवार्षिकी भारत की प्रशंसा के साथ निम्ननिखित टिप्पणियों मे बहुत गहराई से प्रकट किया गया है। ''ऐसे संसार में जहां संचार माध्यम विश्वव्यापी है और व्यक्ति और उसकी एकांतता को कोई मानता नही है, त्रैवार्षिकी–भारत एक दूसरे को समझने का और परिचित होने का व्यापक अवसर है। परस्पर एक–दूसरे को समझने से सभ्यता में सांस्कृतिक संतुलन का होने इस शताब्दी के अन्त तक संभव है''।

–मर्सिडरिन कासानेग्रा, अर्जेन्टिना

''पूर्व त्रैवार्षिकी की भांति मैने जिन चार कलाकारो का नवी त्रैवार्षिकी में परिचय देने का निर्णय किया (और द्विवार्षिकी जैसी अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के लिए एक या दो कलाकारो को चुनना श्रेष्ठ युक्ति हो सकती है), वहा पर विश्व कला बाजार की प्रवृत्तियों के साथ साथ कला जगत में किसी देश की कला या कलाकार के स्थान का भी निर्णय होता है। हमारा मानना है कि त्रैवार्षिकी भारत में प्राकृतिक और सहज विधि से चित्र तथा शिल्पों का प्रदर्शन होता है और यही त्रैवार्षिकी भारत की महानता है। यह प्रदर्शनी जापानी कलाकारो को जो यूरोप उत्तरी अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया के बारे में अधिक जानते है, भारत की महानता ओर विविधता को जानने का संदर्भ देती है।

–तोशीआकी मिनेमुरा, जापान

''त्रैवार्षिकी भारत में भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रस्तुतकृतियों का यह वर्ग भारत में महिलाओ द्वारा पहने गए सुस्पष्ट डिजाईन ओर रंगो वाले कपडों से प्रेरित है। शोख पद्धतियों वाले पंछियों की तरह गरीब देहाती गांव से शहरी महानगरो तक महिलाओ ने अपनी वेशभूषा में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी हैं। तब भी जब वे अवगुण्ठित हेाती है। विशेष रूप से जब वे अवगुण्ठित होती है, उनकी वेशभूषा की अभिव्यक्ति के समान उनका व्यक्तित्व और स्वरूप गौण हो जाता है।''

–लुसिल्डा दासार्दो– कपूर, सं. रा. अमेरिका

प्रत्येक त्रैवार्षिकी के आयोजन के साथ साथ रसिकों की संख्या भी बढती गई और हमें आशा करनी चाहिए कि इस तरह के आयोजनो से कलाकारो और लाप्रेमियो के बीच दूरी कम होती जाएगी। और इस तरह के आयोजनो से भारतीय कला में एक नया अध्याय जुडेगा। प्रथम त्रैवार्षिकी भारत के आयोजन के अवसर पर जनवरी 1968 मे हरबर्ट रीड ने अपनी शुभकामना देते हुए कहा था– ''ऐसी प्रदर्शनियों का उद्देश्य कला में समान अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का प्रदर्शन नही है वरन् यह दिखाना है कि कला के पास एक वैश्विक भाषा है जिसमें सौन्दर्य ओर तेजस्विता हे और जो प्रत्येक देश की कला की अपनी खास विशेषता है, उसे विश्व के प्रत्येक व्यक्ति तक सम्प्रेषित करना है। कला का सबसे बडा कार्य शांतिपूर्ण देशो का नया संसार सृजित करना है, और यह मेरा विश्वास है (और ऐसा हो विश्वास तॉल्सताय का भी था) कि केवल कला ही इस उद्देश्य को पूरा कर सकती हैं।'

उद्देश्य

त्रैवार्षिकी–भारत सम्पूर्ण विश्व की समकालीन कला को एक मंच पर प्रदर्शित करने, देखने व परखने का अवसर प्रदान करती है। इसमें दृश्य कला की विभिन्न विधाओ की प्रदर्शनियां दिल्ली के विभिन्न स्थानों में लगाई जाती है। वह स्थान है :– ललितकला अकादेमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली, नेशनल गैलेरी ऑफ मॉर्डन ऑर्ट, इन्द्रा गांधी नेशनल सेन्टर फार आर्ट और क्रॉफ्ट म्यूजियम आदि। और यह एक महीने तक चलने वाली प्रदर्शनी है। इसमें से जिन कलाकारो को खुले स्थान की आवश्यकता होती है वह खुले में अपनी कला को प्रदर्शित करते है। आधुनिक व समकालीन कला में स्थान एक बहुत बडी समस्या होती है। क्योकि आजकल के कलाकारो को अधिक व खुले स्थान की आवश्यकता उनकी कलाकृति की अतिविशालता के कारण होती है। उसे बंद कमरे या छोटे स्थान पर प्रदर्शित नही किया जा सकता है। आजकल के संस्थापन जो कि एक फुटबॉल के मैदान जितना बडा भी हो सकता है। इसलिए उन्हे दिल्ली के विभिन्न सार्वजनिक स्थानो पर प्रदर्शित किया जाता है। उदाहरण के तौर पर 10वी त्रैवार्षिकी में जर्मनी के कलाकार 'गेब्रिएल हार्डडेकर के संस्थान 'रेड लेक फील्ड' को नेहक पार्क, नई दिल्ली में प्रदर्शित किया गया था। वह काफी बडा संस्थापन था, इसके अतिरिक्त 10वीं त्रैवार्षिकी के एक अन्य कलाकार 'पेटर एफ0स्ट्रास्स, के संस्थापन परियेाजना ''वस्तु पुरूष– ध्रुवीय स्तर '' इसके लिए उन्होने दिल्ली में एक निश्चित क्षेत्र चुन लिया था। जहाँ 18X18 मीटर की माप से चोकोर आकारो में इसे प्रदर्शित किया गया था। इससे सभी को सुविधा हो जाती है। वरना एक ही स्थान पर भीड जमा हो सकती है। इसके अतिरिक्त कुछ कलाकार अपनी कला प्रकृति के समक्ष ही प्रदर्शित करना चाहते है। प्रदर्शित करने व देखने में इसके अलावा दृश्य कला की विभिन्न विधा जैसे– मूर्तिकला, चित्रकला, छापाकला, विडियो संस्थापन

करना, संस्थापन कला, क्रॉफ्ट कला आदि यहा कला प्रदर्शनी के अतिरिक्त अन्य कई कला समारोह भी त्रिनाले में होती थी। जैस कि ललित कला अकादेमी ने आर्ट कार्निवल का आयोजन करवाया था। जिसमें देश विभिन्न कलाकारो ने भाग लिया था। इसमें न केवल अपना कार्य प्रदर्शित किया था बल्कि विभिन्न प्रकार के हेन्डीक्रॉफ्ट के स्टाल भी लगाए गये थे। इसमें भाग लेने के लिए भारत के दूर दराज से कलाकार आये और उन्होने आपस में विचारो का आदान–प्रदान भी किया था। यह एक अनोखा कला उत्सव था जिसमें कलाकारो ने चित्र भी बनाये। यह आर्ट कार्निवाल चतुर्थ त्रिनाले में हुआ था। इसके अतिरिक्त नेशनल बुक ट्रस्ट की तरफ से ''वर्ल्ड बुक फेयर'' भी लगाया जाता है। त्रिनाले के अवसर पर पुस्तको पर डिस्काउंट भी दिया जाता है। इसके अतिरिक्त कला सामग्री की स्टाल भी बेचने के लिए लगाई जाती है। यह एक ऐसा अवसर होता है जब कला सामग्री व पुस्तके (विश्वस्तरीय) डिस्काउंट रेट पर मिल जाती है।

समीक्षा

अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकला प्रदर्शनी ''त्रैवार्षिकी–भारत'' जिसे ललितकला अकादेमी (राष्ट्रीय कला संस्थान) 1968 से निरन्तर तीन वर्षो के अन्तराल पर आयोजित करती रही थी। विश्व के कलाकारो को एक ऐसा मंच उपलब्ध कराना था। जहाँ वह अपनी कला को प्रदर्शित कर सके। त्रिनाले – भारत अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में सफल प्रयास रहा था।

इस प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए अनेक देशो को आमंत्रित किया जाता था। सभी प्रदर्शित कलाकृतियों में से श्रेष्ठ 10 कलाकारो की कृतियों को पुरस्कृत किया जाता था। फिर चाहे वह दृश्यकला की किसी विधा ही क्यो न हो। प्रत्येक पुरस्कार एक लाख रूपये का होता था। विदेशी पुरस्कार विजेताओ को यह मुद्रा विदेशी मुद्रा, में दी जाती थी। उसके साथ एक ट्रॉफी भी दी जाती थी। जिसे प्रसिद्ध मूर्तिकार को मूर्ति पर आधारित होता है।

एक अन्तर्राष्ट्रीय ज्यूरी होती थी। जिसमें से एक सदस्य भारत का वह अन्य विदेशी होते थे।

त्रैवार्षिकी में भाग लेने वाले प्रत्येक देश को पेंटिंग तथा ग्राफिक प्रिन्ट के प्रदर्शन के लिए उचित स्थान दिया जाता था। मूर्तिकारो के लिए भूमि क्षेत्र भी दिया जाता है। यदि किसी कलाकारो को खुले स्थान की आवश्यकता होती थी। तो उसे ललितकला अकादेमी से पहले परमिशन लेनी पडती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. J Lalit Kala contemporary -36, September 1990, (Editor's Note) P.No.7
2. र0वि0 साखलकर ''आधुनिक चित्रकला का इतिहास'8 राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. कैटलॉग–नवीं त्रैवार्षिकी–भारत (पृष्ट संख्या 5)(1997)
4. कैटलॉग – 11वीं त्रैवार्षिकी – भारत के डॉ सुधाकर शर्मा के आभार ज्ञापन लेख को दूसरे पेराग्राफ में से।

❖◆❖